## संस्थान कुलगीत :

यह वटेश्वर का तपोवन,
ज्ञान का उज्जवल शिखर है।
आदि गंगा गोमती पावन सई से,
प्लावित धरा है
परिधि पर काशी त्रिवेणी,
केन्द्र ने इसको वरा है।
गहन हरितमा से सुविकसित
दिव्यता इसकी प्रखर है।
ग्राम्यता है, सहजता है
कला है, साहित्य भी है।
गोविंद वल्लभ पंत जी की
सर्जना लालित्य भी है।
सीखते हैं छात्र कौशल
शील, शिष्टाचार भी।
गुरुजनों से हो सुप्रेरित
वृत्ति का आधार भी।
भारती का स्वर निनादित
ज्ञान का अनुदिन लहर है।
पात्रता की कार्यशाला में
निरत चारो पहर है।
यह जगत में प्रेम का
सौहार्द का संदेश देता।
ग्राम्य-जीवन में सदा
सहकार का उपदेश देता
शिष्य-शिक्षक का मनोरम
ध्यान-धन यह उम्र भर है।